North Asian International Research Journal of Multidisciplinary

CIF IMPACT FACTOR:4.465

ISSN: 2454-2326 Vol. 3, Issue-9 September-2017

# गुलाम वंश में हिन्दुओं की स्थिति

**मनीष त्रिपाठी**
शोध–छात्र
मध्यकालीन/आधुनिक इतिहास विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद।

**सारांश**

1206 ई0 में गुलाम वंश की स्थापना के साथ ही भारत में मुस्लिम शासन का आरम्भ होता है। मुख्य बात यह है कि मुस्लिम शासक जो बाहर से आये थे उन्होंने किस प्रकार यहाँ की जनता विशेषकर हिन्दुओं के साथ सामंजस्य स्थापित किया। प्रस्तुत शोध–पत्र में मैंने यह बताने का प्रयास किया है कि गुलाम वंश के शासकों तथा हिन्दुओं के बीच कैसे सम्बन्ध थे। क्या गुलाम वंश के शासकों की नीति इनके प्रति दमनकारी थी अथवा सहिष्णु थी या वे इनको भी अपने प्रशासन का हिस्सा बनाकर एक मिश्रित राज्य और संस्कृति की स्थापना करना चाहते थे। क्या इन शासकों ने हिन्दुओं को धार्मिक स्वतन्त्रता दी, ये प्रश्न भी इस काल के लिए महत्वपूर्ण है।

**संकेत शब्द**: साहिब–ए–बरीद, लुबाब–उल–अलबाब, हश्म–ए–हिन्दुस्तान, राय, रावत–ए–अर्ज, धर्मस्वामिन, तारानाथ, रत्नोदढ़ी

दिल्ली सल्तनत हिन्दुओं को पर्याप्त किन्तु परिभाषित धार्मिक स्वतंत्रता देता था, जिन्होंने मुस्लिम शासक का आधिपत्य स्वीकार कर लिया था और उसके द्वारा लागू किये जाने वाले नियमों–विनियमों का पालन करने के लिए सहमत हो गये थे। ऐसे लोगों को जिम्मी अथवा रक्षित व्यक्ति कहा जाता था। जिम्मियों को अपने अनुष्ठानों के अनुसार पूजा करने व इस आधार पर कि 'इमारतें स्थायी नहीं होती' मन्दिरों का अनुरक्षण और मरम्मत करने का अधिकार था। किन्तु उन्हें 'इस्लाम के विरोध में' नये मन्दिर बनाने की अनुमति नहीं थी। यह शर्त अस्पष्ट थी; इसका अर्थ था कि हिन्दू लोग अपने घरों में अथवा उन गाँवों में नये मन्दिर बना सकते थे जहाँ कोई मुसलमान नहीं रहता था। इसका यह भी अर्थ था कि हिन्दुओं द्वारा विरोध किये जाने पर पुराने मन्दिर भी नष्ट किये जा सकते थे। जैसा कि हमने देखा है, युद्धों के दौरान बहुत पुराने मन्दिरों को भी लूटा और नष्ट किया जाता था। आरम्भिक चरण में उनमें से कुछ को मस्जिदों में स्थानान्तरित कर दिया गया था अथवा उन्हें नष्ट कर उनकी सामग्रियों का मस्जिदें बनाने में प्रयोग किया जाता था। जब पूरे देश में तुर्क शासन स्थापित हो गया तब ऐसा होना प्रायः बन्द हो गया।[प]

दिल्ली सल्तनत की स्थापना के बाद दो विभिन्न धर्मों (हिन्दू और इस्लाम) के लोगों का घुलना–मिलना प्रारम्भ हुआ। दोनों धर्मों के बीच आपस में सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्तर पर मेल–जोल बढ़ा। ऐबक ने हिन्दू भूसामंतों के साथ योजनागत और व्यवस्थित नीति अपनायी ताकि वो उनका सहयोग प्राप्त कर सके और अपने शासन को सुदृढ़ कर सके। ऐबक ने हिन्दुओं के प्रति वही नीति अपनायी जो आठवीं शताब्दी में सिन्ध और मुल्तान को विजित करने वाले अरबी और बारहवीं शताब्दी में गजनवी सुल्तान ने अपनायी।[पप] ऐबक के उत्तराधिकारी हिन्दुओं के साथ अपने सम्बन्धों को सफल नहीं बना सके। उसका मुख्य कारण यह था कि वो विदेशी थे और भारतीय जीवन और संस्कृति के बारे में उन्हें बहुत ज्ञान नहीं था।[पपप] इन्हें ऐबक जैसा अनुभव भी प्राप्त नहीं था क्योंकि ऐबक 1192 ई0 से ही हिन्दुओं के तौर–तरीकों से परिचित था। सिन्ध और पंजाब में जो परम्परा अरबी शासकों और गजनवी सुल्तान ने स्थापित की उससे प्रभावित होकर दिल्ली के सुल्तानों ने हिन्दुओं के प्रति मैत्रीपूर्ण नीति अपनायी।[पअ] सादिउद्दीन मोहम्मद अफवी द्वारा लिखित 'लुबाब–उल–अलबाब में वर्णित है कि ऐबक ने जीते हुए क्षेत्रों में हिन्दू सरदारों का विश्वास जीतने के लिए एक हिन्दू राणा जो बनारस का था उसको ''साहिब–ए–बरीद'' (खुफिया विभाग का प्रमुख) के पद पर नियुक्त किया। फख्र–ए–मुदब्बिर के अनुसार ''साहिब–ए–बरीद'' का पद राज्य के महत्वपूर्ण पदों में से था और महत्ता की दृष्टिकोण से वजीर पद के बाद इसका स्थान था।[अ] इसका विरोध ऐबक के दरबार में मुस्लिम दरबारियों ने किया।[अप]

एक अन्य स्रोत से हमें यह पता चलता है कि जितने भी हिन्दू सरदारों ने ऐबक के समक्ष समर्पण किया उनको ऐबक ने अपना मित्र बना लिया[अपप] और इन लोगों ने ऐबक के सैन्य अभियानों में भी उसका साथ दिया। कई जगहों पर हमें उल्लेख मिलता है कि ऐबक की सैन्य बल में हिन्दुस्तानी सेना (हश्म–ए–हिन्दुस्तान) में ठाकुर नाम आता है। हसन निजामी भी इस सन्दर्भ में उल्लेख करता है कि ऐबक के दरबार में हिन्दू राजा (राय) रहते थे।[अपपप]

इल्तुतमिश ने भी इस संदर्भ में ऐबक की नीति का अनुसरण किया। चौदहवीं शताब्दी का फरमान इस बात का प्रमाण कि एक हिन्दू सरदार द्वारा बहुत कम धनराशि देने पर भी इल्तुतमिश सन्तुष्ट हो जाता है।[पग]

मिनहाज जुजानी ने कालिंजर के राय के विद्रोह के बारे में विस्तृत वर्णन किया है, जिसको इल्तुतमिश ने कालिंजर का क्षेत्र इजारा के रूप में प्रदान किया था। लेकिन नासिरुद्दीन महमूद के काल में राय विद्रोह कर देता है क्योंकि केन्द्रीय सत्ता कमजोर हो चुकी थी।[ग] इसामी लिखता है कि 1287 ई0 में राजकुमार मुहम्मद की मृत्यु (मंगोल अभियान में) के पश्चात हिन्दू सरदारों और केन्द्रीय सत्ता के बीच दोस्ताना सम्बन्ध और सहयोग स्थापित होने लगा तथा एक दूसरे के प्रति सम्मान और आदर का भाव पैदा होने लगा। इसी क्रम में वैवाहिक सम्बन्ध भी स्थापित किये गये। उदाहरण के तौर पर, राय कालू ने अपने दामाद राजकुमार मुहम्मद का शव मंगोलों से लेने के लिए अपने कोष से बहुत बड़ी रकम मंगोलों को दी थी।[गप]

बरनी लिखता है कि बलबन जब बंगाल में तुगरिल के विद्रोह को समाप्त कर लौटता है तो हिन्दू, मुस्लिम, तुर्क और ताजिक सरदार उसका अभिनन्दन करते हैं।[गपप] बलबन ने अपने प्रशासन में उन हिन्दुओं को शामिल किया जो योग्य, वीर और

प्रतिभावान थे। बरनी इस संदर्भ में कोतवाल ब्रिन्जतन और हात्या पाठक का उल्लेख करता है जो उस समय के वीर योद्धा थे। इनके बारे में बरनी कहता है कि ये बहुत ही साहसी थे और एक लाख जीतल सालाना इनकी तनख्वाह थी। जलालुद्दीन फिरोज खलजी के समय से सिद्दी मौला के साथ सुल्तान के विरूद्ध षडयंत्र में शामिल होने पर इन दोनों को पदच्युत कर दिया गया था। समकालीन स्रोतों से हमें पता चलता है कि दिल्ली के सुल्तानों ने कभी भी हिन्दुओं के धर्म और संस्कृति में हस्तक्षेप नहीं किया और न ही उलेमा वर्ग ने इनको दिये जाने वाले अनुदान में कभी हस्तक्षेप किया था, इनकी धार्मिक स्वतंत्रता में बाधा पहुँचायी हो। इसका सबसे अच्छा उदाहरण इल्तुतमिश के काल का है। एक बार उलेमा वर्ग ने इल्तुतमिश के समक्ष ये दबाव डालने का प्रयास किया कि गैर–मुस्लिम या तो इस्लाम धर्म कबूल करें या मृत्यु। सुल्तान ने अपने वजीर जुनैदी को इस संदर्भ में उलेमाओं से बातचीत करने को कहा। जुनैदी बहुत चतुर और व्यवहारिक था उसने उलेमाओं से कहा कि हिन्दुस्तान में मुसलमानों की संख्या उतनी ही है जितना खाने में नमक और अगर सारे हिन्दू एक हो गये तो मुस्लिमों को उनका दमन करना कठिन कार्य हो जायेगा। इस प्रकार उलेमा वर्ग सन्तुष्ट होकर वापस चले गये।[गपपप]

इस प्रकार बलबन ने भी सुल्तान बनने के बाद हिन्दुओं के प्रति वही नीति अपनायी जो उसके पूर्व शासकों की नीति थी। अमीर खुसरो लिखता है कि बलबन के रावत–ए–अर्ज इमाद–उल–मुल्क ने कई रायों को केन्द्रीय सत्ता से जोड़ रखा था।[गपअ]

तिब्बती बौद्ध भिक्षु, धर्मस्वामिन ने इल्तुतमिश के समय में भारत की यात्रा की थी। उसने दिल्ली के सुल्तान और बिहार के हिन्दू भू सामंतों के शान्तिपूर्ण सम्बन्धों के बारे में लिखा है। उसके अनुसार तुर्क सैनिक बिहार में विभिन्न जगहों पर नियुक्त थे और उन्होंने वहाँ हिन्दुओं के मामलों में कोई दखल नहीं दिया जो उनका हिन्दुओं के प्रति सम्मान और आदर प्रकट करता है।[गअ]

धर्मस्वामिन, जो तिब्बती यात्री था और 1236 ई0 तक भारत में रहा लिखता है कि नालन्दा का अस्तित्व था और उसने वहाँ के शिक्षकों से शिक्षा ली और लाभान्वित हुआ।[गअप] एक और तीर्थ यात्री तारानाथ जिसने भारत की यात्रा की लिखता है कि बिहार में तुर्क शासन की स्थापना के वर्षों बाद जैन तीर्थंकरों और बौद्ध भिक्षुओं में धार्मिक शास्त्रार्थ के दौरान विवाद हो गया जिसके फलस्वरूप कुछ बौद्ध मन्दिरों और रत्नोदढ़ी (नालन्दा विश्वविद्यालय लाइब्रेरी) को नुकसान पहुँचाया गया।[गअपप]

दिल्ली सुल्तानों ने रैयत (कृषक और निम्न जाति के कारीगर) और उच्च जाति के हिन्दुओं में विभेद किया। मोरलैण्ड लिखता है कि बरनी हिन्दू शब्द सिर्फ भू सामंतों के लिए प्रयोग करता है।[गअपपप] मिनहाज जुजानी भी भू सामंतों के लिए ही हिन्दू शब्द का प्रयोग करता है।[गपग] भू सामंतों के अतिरिक्त बरनी फतवा–ए–जहाँदारी में हिन्दुओं के धार्मिक नेता के रूप में ब्राह्मणों का उल्लेख करता है।[गग] समकालीन स्रोतों से पता चलता है कि उच्च जाति के हिन्दुओं को ही असली हिन्दू समझा जाता था।

**संदर्भ :**


प सतीश चन्द्र, दिल्ली सल्तनत (1206–1526), पृ0 279–80

पप इक्तिदार हुसैन सिद्दीकी, दिल्ली सुल्तान – अथारिटी एण्ड किंगसिप अण्डर द सुल्तान्स आफ दिल्ली, 2006, पृ0 34–35

पपप अली बिन हामिर कूफी, फतहनामा–ए–सिन्ध (चचनामा) एडि0 नवी बख्श बलोच, इस्लामाबाद, 1983, पृ0 159–162

पअ इक्तिदार हुसैन सिद्दीकी, इण्डो–पर्सियन हिस्टोरियोग्राफी इन द थर्टीन्थ सेंचुरी, 2010, पृ0 34–7

अ मुहम्मद बिन मंसूर (फख्र–ए–मुदब्बिर), आदाब–उल–मुल्क अल–किफाफत–उल–मामलूक, एडि0, मुहम्मद सरवर, पृ0 25–8

अप अफवी, लुबाब–उल–अलबाब, एडि0 ई0सी0 ब्राउने, लन्दन, 1906, पृ0 113–14

अपप तारीखे फखे–आ–मुदब्बिर, एडि0 डेनिसन रास, लन्दन, 1927, पृ0 26

अपपप हसन निजामी, ताजुल मासिर, ब्रिटिश लाइब्रेरी लन्दन, पृ0 133

पग 'आइन–उल–मुल्क माहरू, इंशा–ए–माहरू, एडि0 शेख अब्दुर राशिद, लाहौर, 1965, पृ0 17

ग मिनहाज : उस सिराज जुजानी, तबकात–ए–नासिरी, एडि0 अब्दुल हबीबी, काबूल, 1963, पृ0 485–86

गप इसामी, फुतुह–उस–सलातीन, एडि0 ए0 उषा, मद्रास, 1948, पृ0 180–1

गपप बरनी, तारीखे फिरोजशाही, कलकत्ता, 1962, पृ0 106

गपपप बरनी, साहिफा–ए–नत–ए–मुहम्मदी, रजा लाइब्रेरी रामपुर, नुरुल हसन, मेडियेवल इण्डिया, अलीगढ़, 1950, पृ0 102–3

गपअ अमीर खुसरो, मुकदमा–ए–घुरातुल–कमाल, ब्रिटिश लाइब्रेरी, लन्दन, पृ0104

गअ बायोग्राफी ऑफ धर्मस्वामिन, जार्ज रोएरिच, पटना, 1959, पृ0 65, 98

गअप बायोग्राफी ऑफ धर्मस्वामिन, पृ0 63–65, 89–100

गअपप हसन निशात, काम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ बिहार, भाग–2, 1983, पृ0 40

गअपपप डब्लू0एच0 मोरलैण्ड, द अग्रेरियन सिस्टम ऑफ मुस्लिम इण्डिया, कैम्ब्रिज, 1968, पृ0 39–47

गपग मिनहाज, तबकात–ए–नासिरी, भाग–2, पृ0 70

गग बरनी, फतवा–ए–जहाँदारी, एडि0 ए0एस0 खान, लाहौर, 1972, पृ0 18